Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

पूर्वोत्तर की लोककथाओं में स्त्री अस्मिता का प्रश्न

सेतु कुमार वर्मा
पीएच.डी. (हिंदी),हैदराबाद विश्वविद्यालय

Article Info
Volume 5, Issue 6
Page Number : 83-88

Publication Issue :
November-December-2022

Article History
Accepted : 01 Dec 2022
Published : 20 Dec 2022

शोध सार : लोककथाएँ किसी समाज के पारंपरिक वैचारिकी का वाहक होते हैं। पूर्वोत्तर भारत सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि की भूमि है। पूर्वोत्तर भारत की ट्राइबल संस्कृतियों में स्त्रियों का स्थान बेहद महत्वपूर्ण रहा है। लोककथाओं के माध्यम से हमें सम्बंधित समाज में स्त्रियों से सम्बंधित विभिन्न मुद्दों को समझने का अवसर मिलता है। पूर्वोत्तर की स्त्रियों की अस्मिता का प्रश्न उनकी ट्राइबल अस्मिता से जुदा हुआ है। आज के समय में जहाँ पूर्वोत्तर पर बाहरी संस्कृतियों एवं सत्ताओं का दवाब बढ़ता जा रहा है ऐसे में पूर्वोत्तर की स्त्रियों की ट्राइबल स्त्रियों के लिए अपनी ट्राइबल अस्मिता एवं संसाधनों को प्रश्न बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है। साथ ही पूर्वोत्तर की स्त्रियों के प्रति शेष भारत में व्याप्त कुंठाग्रस्त पूर्वाग्रह एक बेहद गंभीर समस्या बन गई है। वहीं अकादमिक जगत में पूर्वोत्तर की स्त्रियों की स्थति के प्रति एक खुशफहमी की समस्या दिखती है जो उनकी आंतरिक समस्याओं से ध्यान हटाने का काम करती है। इस शोध प्रत्र में हम पूर्वोत्तर की कुछ ट्राइबल समुदायों की कुछ लोककथाओं के माध्यम से स्त्री अस्मिता से जुड़े प्रमुख प्रश्नों का अध्ययन करेंगे।

संकेत शब्द : पूर्वोत्तर, स्त्री, अस्मिता, लोककथा, ट्राइबल नारीवाद।

विषय विवेचन : लोक का अर्थ सामान्य जन समझा जा सकता है। किसी समुदाय के वैसे लोग जो सामान्य जीवन जीते हैं, जिनके ज्ञान का आधार सहज अर्जित अनुभव होता है वे लोक कहे जाते हैं। इसी लोक के सहज जीवन की अभिव्यक्ति, उनकी परंपरा, उनका विश्वास, रीति–रिवाज, एवं उनकी पारंपरिक वाचिक सृजनात्मकता सम्मिलित रूप से लोकवृत्त कहलाती है। लोकवृत्त का अर्थ लोक द्वारा विकसित संवर्धित वह ज्ञान, परंपरा और साहित्य है जो व्यवहार में एवं वाचिक रूप से पीढ़ियों की संवेदना, परंपरा, सृजनात्मकता और कल्पना को व्यक्त करता है। लोककथा लोकवृत्त की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। लोककथा लोक द्वारा विकसित वाचिक कथाएँ हैं जो पीढ़ियों में संचालित होती रहती है।

पूर्वोत्तर भारत सांस्कृतिक दृष्टी से बेहद समृद्ध क्षेत्र है। यहाँ की अधिकाँश जनसंख्याँ आदिवासी है। पूर्वोत्तर के आदिवासी समुदाय के लोग अपने आपको 'ट्राइब' के नाम से संबोधित करना पसंद करते हैं। लगभग उन्नीसवीं शताब्दी तक सभी ट्राइबल समुदायों के पास अपनी लिपि न होने के कारण पारंपरिक रूप से इस क्षेत्र में साहित्य की अभिव्यक्ति का मूल साधन वाचिक परंपरा ही रही है। अत: यहाँ स्वाभाविक रूप से लोकसाहित्य का समृद्ध भंडार मिलता है। साथ ही लिखित इतिहास के अभाव में लोकसाहित्य, मिथक–कथाएँ इनके इतिहास और सामाजिक संरचना को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वर्तमान संदर्भों में पूर्वोत्तर के बारे में जो थोड़ी–बहुत समझ विकसित हो रही है उसमें सामान्यीकरण की प्रवृत्ति बहुत दिखती है। स्त्री के संदर्भ में यह सबसे अधिक है। जहाँ शेष भारत में पूर्वोत्तर की स्त्रियों के प्रति कुंठाग्रस्त विचार एक समस्या के रूप ले चुका है वहीं अकादमिक जगत में लोग यह मान कर चलते हैं कि, ''पूर्वोत्तर में स्त्री बराबरी की स्थिति में रहती है, उनके साथ किसी भी प्रकार का अत्याचार नहीं होता, वे अपने फैसले लेने के लिए स्वतंत्र होती हैं'' जैसे अस्मिता संबंधित तमाम प्रश्नों के पूर्वाग्रही उत्तर व्याप्त हैं। किन्तु पूर्वोत्तर में स्त्री की कोई सामाजिक समस्या नहीं है, यह धारणा न सिर्फ भ्रांत है बल्कि स्त्री की समस्याओं से मुह मोड़ कर उनकी स्थिति को गंभीर बनाने का काम कर रही है।

पूर्वोत्तर की लोककथाओं में स्त्री संबंधी समस्याओं की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। इस शोध पत्र में हम मुख्य रूप से खासी लोककथाओं में स्त्री की अस्मिता संबंधी प्रश्नों को देखने का प्रयास करेंगे क्योंकि खासी समाज मातृवंशीय समाज है और इसमें स्त्री की स्थिति की पड़ताल अलग महत्व रखती है। इसके साथ ही आदी, तंखुल नागा की कुछ लोककथाओं में स्त्री अस्मिता के प्रश्न को समझने का प्रयास किया जाएगा।

खासी समाज मातृवंशीय सामाजिक व्यवस्था का पालन करता है। अर्थात वंश माँ के नाम से चलता है और मातृक संपत्ति सबसे छोटी बेटी को मिलता है। यहाँ की लोककथाओं में इस व्यवस्था की स्थापना को देखा जा सकता है। खासी समाज में संपत्ति के बटवारे संबंधी एक लोककथा प्रचलित है। कथा का सार यह है[i] कि, 'का रेम्यू' अर्थात् धरती की मृत्यु के बाद उनकी अन्त्येष्टी की जिम्मेदारी उनकी बेटियों पर आती है। सबसे बड़ी बेटी सूरज ने सबसे पहले कोशिश की। पूरी ताकत लगा देने के बाद भी वह सफल नहीं हुई। इसके बाद अन्य पुत्रियां हवा, प्रकृति और पानी आती हैं और अपनी कोशिशें करती हैं लेकिन वे भी सफल नहीं होतीं। फिर उनकी सबसे छोटी बेटी अग्नि आती है। उसने सफलता पूर्वक अपनी माँ का रेम्यू की अन्त्येष्टी को संपन्न किया। कहा जाता है तभी से खासियों में माँ की वारिस सबसे छोटी बेटी को बनाने की प्रथा शुरू हुई। इस वजह से खासी महिलाओं के बारे में अनुमान लगाया जाता है कि मातृवंशीय सामाजिक व्यवस्था के कारण स्त्री यहाँ प्रभुत्वशाली भूमिका में हैं। खासी समाज की ऊपरी समझ इस धारणा को और बढ़ाती है। माना जाता है कि खासी स्त्री पूर्ण स्वतंत्र हैं और पुरुष से अधिक अधिकार रखती हैं। खासी स्त्री को पुरुषों को दबा कर रखने वाली भी कहा जाता है। स्त्री को यहाँ निश्चित रूप से आर्थिक और वंशीय विशेषाधिकार प्राप्त है। इससे उन्हें पुरुषों पर आश्रित नहीं रहना पड़ता है। 'स्त्रियों की गतिविधि पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं है।'[ii] किन्तु यहाँ पारंपरिक रूप से स्त्री की राजनीतिक क्षेत्र में उपस्थिति को बाधित कर दिया गया। 'दोरबार' में स्त्री के प्रवेश की अनुमति नहीं थी। सार्वजनिक–राजनीतिक मामलों में स्त्री के दखल को वर्जित किया गया है। इसपर खासी समाज में कहावत है "अगर मुर्गियां बांग देंगी तो दुनिया बर्बाद हो जाएगी।"[iii] आर्थिक रूप से भी स्त्री पूर्ण स्वतंत्र नहीं कही जा सकती। 'मातृक संपत्ति से संबंधित फैसले वह बिना मामा और पिता की अनुमति के नहीं ले सकती। किन्तु खासी समाज में स्त्री अथवा पुरुष द्वारा स्वयं–अर्जित धन पर कोई पाबंदी नहीं है।'[iv] स्त्री के राजनीतिक अधिकारों का न होना निश्चित रूप से समाज में स्त्री की भूमिका सीमित करती है। 'खासी परिवार के बारे में हुए पिछले नृतत्वशास्त्रीय अध्ययनों ने खासी स्त्री की पूर्वाग्रही छवि को ही पुष्ट किया है। मातृवंशीयता के कारण इस समाज को स्त्री केन्द्रित और स्त्री वर्चस्व वाला समझा जाता है। लेकिन सूक्ष्म समाजशास्त्रीय अध्ययन से इस धारणा पर प्रश्न चिन्ह लगता है। यहाँ तक कि यह भी पता चलता है कि ग्रामीण परिवारों में पतियों के पास व्यक्त मिथकों से कई अधिक ताकत प्राप्त है।'[v]

खासी समाज में वंश के पुत्री द्वारा आगे बढ़ने के कारण स्त्री का सामाजिक महत्व बढ़ जाता है। 'पुत्री का होना उल्लास का विषय होता है। लेकिन खासी समाज में पुत्र की उपेक्षा ही होती है ऐसा नहीं कहा जा सकता। मामा द्वारा घर के संपत्ति के मामलों में फैसला लेना मातृवंशीय समाज में पुरुषों के महत्व को भी स्थापित कर देता है। इस कारण बेटा हो या

बेटी, परिवार में लैंगिक दुराग्रह का वैसा स्वरुप खासी समाज में नहीं दिखता।'[vi] लैंगिक निरपेक्षता के इस पहलू की छाप यहाँ के लोकसाहित्य पर दिखती है। 'का नाम और बाघ'[vii] की कथा में बाघ गर्भवती स्त्री की जान इस शर्त पर छोड़ देता है कि होने वाली संतान अगर बेटा होगा तो वह उसे मित्र बना लेगा और अगर बेटी होगी तो वह उसे अपने साथ लेकर जाएगा। जन्म से पहले गर्भवती माँ इस चिंता में नहीं दिखती कि उसकी होने वाली संतान बेटा होगा या बेटी बल्कि यह कि बाघ से वह अपनी संतान की रक्षा कैसे करेगी? माँ की चिंता समाज में लड़की के प्रति सोच को अभिव्यक्त करती है। खासी समाज में लड़की का महत्व बहुत अधिक है, इसलिए बेटी के जन्म के बाद माँ उसे बाघ से बचा कर रखने का हर संभव प्रयास करती है। सामाजिक आग्रह की अभिव्यक्ति लोककथाओं में देख कर कहा जा सकता है कि सामाजिक व्यवस्था इस लोककथा के स्वरुप को गढ़ रहा है। 'का लिकाई'[viii] की कथा खासी समाज में माँ–संतान के बीच के संबंध की गहराई को व्यक्त करती है। खासी समाज में माँ अपने संतान से जिस गहराई से जुड़ी रहती है उसकी अभिव्यक्ति यह कथा करती है। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि साहित्य समाज की सारी प्रचलित धारणाओं का अनुसरण करता रहेगा। समाज के विपरीत चित्र भी दिख सकते हैं। लिकाई की कथा में ही सौतेला पिता बेटी को मार कर उसका मांस पका देता है। जिस तरह से समाज का कोई निश्चित चेहरा नहीं होता, उसी तरह साहित्य में भी बहुत तरह की संवेदनाओं की अभिव्यक्ति होती है।

मातृवंशीय खासी समाज के प्रति यह धारणा रहती है कि यहाँ स्त्री पूर्णत: स्वतंत्र है। तिपलुट नोंगबरी कहती हैं– "यहाँ स्त्री को परंपरा के पालन की जिम्मेदारी तो दे दी गयी है किन्तु अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए अधिकार नहीं दिया गया है। यह उन्हें गंभीर रूप से मामा के ऊपर आश्रित कर देता है।"[ix] किन्तु स्त्री के पास संपत्ति का होना और बिलकुल न होना एक प्रभावशाली विकल्प है। जहाँ स्त्री को बिलकुल अधिकार नहीं होगा वहाँ की अपेक्षा अधिकारों का वंश के रूप में, संपत्ति के संरक्षिका के रूप में आने से स्थिति में परिवर्तन तो आ ही जाता है।

खासी समाज में राजपरिवार के पृष्ठभूमि की कथाओं में स्त्री तो कमोबेश अपने हक से समझौता करती नजर नहीं आती[x] लेकिन इसके लिए उन्हें आजादी हो ही यह निश्चित नहीं है। 'मनिक रायतांग की कथा'[xi] में महदोई ने मनिक रायतांग से प्रेम किया था। 'सीएम' दो–तीन वर्षों से अनुपस्थित था। इस स्थिति में किसी स्त्री के भीतर उठने वाली सहज ईच्छा इस कथा में व्यक्त होती दिख सकती है। उसने अपनी भावनात्मक एवं शारीरिक जरूरतों को दो वर्षों तक दबाया। किन्तु एक समय के बाद वह अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए बाहर निकलती जरूर है। लेकिन राजा ने इस संबंध को स्वीकार नहीं किया। उसने रानी के प्रेमी को मौत की सजा सुनाई। इससे स्पष्ट होता है कि खासी समाज में भी विवाह के बंधन में बंधी स्त्री की यौनिकता पर पुरुष का नियंत्रण कमोबेश है ही। भले ही इसके लिए स्त्री को सजा न दी गयी हो लेकिन उनके इस कदम का राजा ने सम्मान नहीं किया है।

इन कथाओं से खासी समाज में अपने वर्ग से बाहर विवाह न करने की सलाह दी जाती है। 'पंडूक गुटुर–गू क्यों करते हैं'[xii] कथा में युवती पंडूक किसी अन्य समूह के पक्षी से प्रेम करने लगती है। उस समय पंडूक बहुत सुन्दर गीत गाते थे। परिवार और समाज के लोग उसे रोकते हैं। युवती पंडूक के न मानने पर उन्होंने उसे पतझड़ आने तक रुकने को कहा। पतझड़ आते ही वह पक्षी बेर की पेड़ से गायब हो गया। इस धोखे और विरह से व्यथित होक वह रोते–रोते प्राण त्याग देती है। उसके परिवार के अन्य पंडूक भी इस त्रासदी पर रोते रहे और लगातार रोने के कारण उनके गले का गान समाप्त हो गया। स्त्री को अपना वर चुनने की आजादी तो खासी समाज देता है किन्तु ऐसे मूल्यों को स्थापित करती कथा स्त्री को मुक्त मन से अपने फैसले लेने से रोकती होगी।

किन्तु अगर इस कथा को हम खासी समुदाय की नज़र से देखें तो यह संभव है कि उस समाज ने सही में ऐसे किसी त्रासदी को भोगा हो। ऐसा भी संभव है कि यह लोककथा उस त्रासदी को बयान कर रही हो। ऐसे में हमारे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम ट्राइबल समुदायों का अध्ययन करते हुए उनको उनकी नज़र से देखने का प्रयास करें।

विवाह संबंधी आदी लोककथा एक अलग पक्ष प्रस्तुत करती है। आदी समाज पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था का पालन करता है। 'दो हृदय एवं दो वृक्ष'[xiii] कथा में 'नोतेक' नामक युवती जो बहुत सुन्दर थी, अपने किसी रिश्तेदार के गाँव जाती है। वहां उसकी मुलाकात एक बेहद आकर्षक युवक 'कोक्केंग' से होती है। दोनों में प्रेम हो जाता है। लड़के का पिता इस रिश्ते के खिलाफ था, कि कैसे उसका बेटा किसी दूर के गाँव की अनजान लड़की से विवाह कर सकता है। गाँव में रहते हुए अपने रिश्ते पर खतरा महसूस कर दोनों बाहर भाग जाते हैं। कुछ समय बाद उन्हें अपने परिवार की याद सताने लगती है और अपने परिवार द्वारा माफ़ करके स्वीकार कर लिए जाने की उम्मीद से वे दोनों वापस लौट रहे होते हैं। लड़के के पिता को इसकी खबर लग जाती है। जब वे दोनों नदी पर स्थित पुल को पार कर रहे थे तो उसके पिता ने पुल की रस्सी को कटवा दिया। नोतेक और कोक्केंग नदी में डूब जाते हैं। दोनों का शव नदी के दोनों किनारों पर लग जाता है। कुछ समय बाद दोनों स्थान पर पीपल के दो पेड़ उगते हैं और बड़ा होने पर नदी के दोनों किनारों पर स्थित ये पेड़ एकदूसरे से लिपट जाते हैं। आदी लोक की मान्यता है कि ये पेड़ नोतेक और कोक्केंग की कड़वाहट से भरी हुई आत्मा है। भले ही वे अपने प्रेम–मिलन को जीवित अवस्था में पूर्ण नहीं कर पाए किन्तु मर कर उन्होंने ऐसा कर लिया।

इस कथा विशेष पर गौर करें तो यही समझ में आता है कि आदी लोककथा में सिर्फ लड़की के फैसलों पर ही नहीं अपितु लड़कों पर भी परिवार का नियंत्रण हो सकता है। लड़के का पिता लड़की को इसलिए स्वीकार नहीं कर रहा था क्योंकि वह अनजान थी और किसी दूर के गाँव से थी।

लेकिन इस कथा के आधार पर हम आदी समाज को लिंग–निरपेक्ष (जेंडर–न्यूट्रल) नहीं मान सकते। एक अन्य कथा 'एक दास लड़के ने कैसे धनवान व्यक्ति की बेटी से शादी की'[xiv] में स्त्री की असहाय स्थिति और 'विक्टिम ब्लेमिंग' का उदाहरण मिलता है। इसमें एक चालक और दुष्ट दास लड़का एक धनी व्यक्ति की बेटी को जंगल में भटका देता है और रात घिर आने पर वह स्वयं को असहाय पाती है। इसका फायदा उठा कर वह उसके साथ संबंध बना लेता है। अगले दिन जब वह गाँव लौटती है तो उसका प्रेमी तथा अन्य लोग लड़की को ही दोष देते हैं और वह स्वयं की 'इज्जत' को जाता हुआ महसूस करती है,

"अगर वह 'तुतुरुंग' पक्षी उस रात नहीं चीखी होती,
मैं स्वयं को उस दास लड़के को समर्पित न करती,
अगर वह दुष्ट पक्षी उस रात मुझे न डराती
मैं रहती अपने प्रियतम के साथ खुशी–खुशी।"

कह सकते हैं कि इस आदी लोककथाओं में स्त्री की अस्मिता का अतिक्रमण हो रहा है। उसका कोई दोष न होने हुए भी उसे त्याग दिया जाता है।

इस परिप्रेक्ष्य में एक तंखुल लोककथा पूर्वोत्तर में स्त्री की 'इज्जत' चले जाने की अवधारणा को नकारती दिख सकती है। 'जिंगशोंग कामरंग की कथा'[xv] से स्पष्ट होता है कि 'महाराजाओं' द्वारा तराई के मणिपुरियों के यहाँ से औरतों का अपहरण करवाया जाता था। जब एक महाराजा को खबर मिली कि कामरंग की पत्नी बहुत सुन्दर है तो उसने दोनों को साथ आने का आदेश दिया। खाना खिलाने के बाद महाराजा के सैनिकों ने कामरंग को बाहर धकेल दिया और उसकी पत्नी के साथ महाराजा और मंत्रियों ने 'उसके साथ पाप कर्म किया' (There, the king and his councillor committed sin to

her)। कुछ इंतजार के बाद कामरंग चिल्लाता है "क्या तुम मेरी पत्नी को नहीं भेजोगे?" कुछ समय बाद किसी के कंधे के सहारे उसकी पत्नी बाहर आती है। महाराजा का चिकित्सक उसका गर्भपात करवाता है और उसे स्वस्थ करने के बाद दोनों पति-पत्नी खुशी-खुशी वापस अपने गाँव लौट जाते हैं (After curing her, the husband and wife reached their village happily)। आगे कथा में पूरे जीवन और मृत्यु के बाद भी साहसी और बुद्धिमान कामरंग उस महाराजा के लिए सिरदर्द बन जाता है किन्तु इस कथा में जो सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है वह है स्त्री पर होने वाली हिंसा के लिए स्त्री को ही जिम्मेदार न माना जाना। आम तौर पर स्त्री के साथ होने वाली शारीरिक हिंसा के बाद समाज स्त्री को उसी नजर से नहीं देखता है, लेकिन इस कथा में स्त्री की अस्मिता को उसकी 'शुद्धी' से जोड़ कर नहीं देखा जा रहा है। यहाँ हिंसा हिंसा है, उसके बदले का अपना तरीका है। यहाँ शोषित का त्याग नहीं किया जा रहा है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि पूर्वोत्तर की संस्कृति में निश्चित रूप से शेष भारत की अपेक्षा स्त्री बेहतर स्थान रखती है किन्तु हमें स्त्री की स्थिति के सामान्यीकरण से बचना चाहिए। ऐसी प्रवृत्ति स्त्री की वास्तविक स्थिति के अध्ययन के प्रति लोगों को लम्बे समय के लिए उदासीन बना देती है। अकादमिक क्षेत्र में व्याप्त खुशफहमी के भाव के कारण पूर्वोत्तर के समाजों की स्त्रियों की समस्याएं अनसुनी रह जाती है। पूर्वोत्तर की लोककथाओं में स्त्री की स्थिति एवं अस्मिता के कुछ पक्ष उभर कर आते हैं जो यह बताने के लिए सहायक हैं कि यहाँ के समाजों में भी स्त्री की यौनिकता, उसके फैसले, राजनैतिक अधिकार आदि पर पुरुष वर्चस्व स्थापित है। अगर लोककथाओं की बात करें तो कुछ कथाओं में स्त्री पर होने वाली हिंसा का जिम्मेदार स्त्री को ही मानने की प्रवृत्ति मिलती हैं किन्तु कुछ कथाएँ ऐसी भी हैं जो स्त्री के साथ खड़ीं मिलती है। पूर्वोत्तर की लोककथाओं में स्त्री अस्मिता के विविध एवं कई बार विपरीत रूप सामने आते हैं, जो हमें यह बतलाने के लिए पर्याप्त है कि अन्य समाजों की तरह इन समाजों में भी स्त्री अस्मिता सम्बन्धी कुछ मूलभूत प्रश्न हैं जिन पर काम होना बांकी है।

किन्तु पूर्वोत्तर की ट्राइबल स्त्रियों की अस्मिता का अध्ययन पश्चिमी नारीवादी विचारों से करना उचित नहीं होगा। पूर्वोत्तर की ट्राइबल स्त्रियों की समस्याओं को मुख्यधारा नारीवाद उचित तरीके से उठाने में विफल रहा है। पूर्वोत्तर की स्त्रियों सम्बन्धी अध्ययन के लिए पूर्वोत्तर की ट्राइबल नारीवादी दृष्टिकोण का उपयोग अनिवार्य है। पूर्वोत्तर की महिलाओं के लिए अस्मिता का प्रश्न, सैन्य हिंसा, जमीन और संसाधनों का प्रश्न, नस्लवाद की समस्या, बाहरी लोगों का कुंठाग्रस्त पूर्वाग्रही सोच जैसे तमाम मुद्दे बेहद गंभीर हैं।

सन्दर्भ सूची :

---

[i]. डेज्मंड खरमाओफिलांग, रमणिका गुप्ता (अनुवाद), 'महा माँ धरती (रेम्यू), पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएँ, नेशनल बुक ट्रस्ट, नै दिल्ली 2013, पृष्ठ 29-33

[ii]. Bishwa Nath Mukherjee, Restrictions on married women's Activities and Some Aspects of husband-wife Relations in Khasi Culture, Indian Anthropologist, Vol. 4, No. 2 December, 1974, page 124

[iii]. Bishwa Nath Mukherjee, Ibid, page 105

[iv]. Valentina Pakyntein, 2000, page 28 तथा शिलांग में 'सेंग खासी' सदस्य रांगफेर रिनजाह से साक्षात्कार

[v]. Bishwa Nath Mukherjee, Deceber, 1974, page 123

[vi]. Valentina Payntein, Gender Preference in Khasi Society: An Evaluation of Tradition, Change and Continuity, Indian Anthropologist, Vol. 30, No. 1/2 June-Dec. 2000, Indian Anthropological Association, page 30

[vii]. Kynpham Sing Nongkynrih, Around the Hearth Khasi Legends, 2007, page 41-54

[viii]. Ibid, page 111-128

[ix]. Tiplut Nongbri, Gender and The Khasi family structure: some implication of the Meghalaya Succession Act, 1984, Sociological Bulletin, Vol. 37, No. 1/2. March-September, 1988, page 77

[x]. 'मनिक रायतांग' कथा में रानी ने अपनी इच्छा को प्रकट किया और प्रेम भी किया

[xi]. फिल्मिका (प्रस्तुति), रमणिका गुप्ता (सम्पादक), पूर्वोत्तर आदिवासी मिथक एवं लोककथाएँ, पृष्ठ 166

[xii].विजोया सावियान, वही, पृष्ठ 153

[xiii]. Obang Tayeng, 'Two hearts and two trees', Folk tales of the Adis, Mittal publication, New Delhi, 2003, page 99-102

[xiv]. Ibid, 'How a slave boy married a rich man's daughter' page 103-104

[xv]. S. Arokianathan, 'The story of Zingshong Kamrang', Central Institute of Indian Languages, Mysore, 1982, Page 107-123